कनिष्ठ महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की रोमांचकारी प्रवृत्ति का शैक्षिक उपलब्धि से आंतरसंबंध

डॉ. टी.डी. भांडारकर
सहायक प्राध्यापक
पुंजाभाई पटेल शिक्षण महाविद्यालय, गोंदिया
Email-tilakbhandarkar2015@gmail.com

.....

प्रस्तावना :

प्रसिध्द शिक्षाशास्त्री रूसो के अनुसार ''कृत्रिमता संबंधित समस्त बंधनों को तोडकर बालक की नैसर्गिक प्रवृत्तियों तथा प्राकृतिक इच्छाओं को विशेष महत्व प्रदान किया जाये जिससें बालक अपनी प्राकृतिक प्रवृत्तियों की अभिव्यक्ती स्वतंत्रतापूर्वक करके पूर्णरूपेण विकसित हो सके ।'' इसके साथ ही प्रसिध्द शिक्षाशास्त्री पेस्टालॉजी, हरबर्ट स्पेन्सर, फोब्रील, गुरूदेव रविन्द्रनाथ टॅगोर ऐसी अनेक शिक्षा शिक्षाशास्त्री हूये है जिन्होने छात्रों की प्रवृत्ति को शिक्षा का आधार स्विकार तथा शिक्षा को उन्नती के शिखर तक पहुॅचाने के लिये परंपरागत शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन किया और वर्तमान छात्रों की प्रवृत्तियों से प्रभावित होकर शिक्षा के स्वरूप को निर्धारित किया है और यह सत्यही है कि शिक्षा की व्यवस्था बालक की मूल / मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों, रूचियों, इच्छाओं, आवश्यकताओं, क्षमताओं ताथा योग्यताओं को ध्यान में रखकर ही की जानी चाहिये । अत: निश्चित रूप से शिक्षा का आधार बालक की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति ही होनी चाहिये ।

बालकों की मूल या मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों में विभिन्न प्रवृत्तियों का समावेश होता है । उनमें उनकी रोमांचकारी प्रवृत्ति भी एक मनोवैज्ञानिक प्रवृति ही है जो हमेशा से ही, शिक्षा का निरंतर रूप से आधारस्तंभ रही है । इस रोमांचकारी प्रवृत्ति में साहसिक वृत्ती की विभिन्न प्रकार की स्पर्धा तथा खेलों का भी समावेश होता है । बालकों को सामुहिक रूप से खेल, स्पर्धा, शिक्षा तथा पाठयक्रम सहगामी अन्य क्रियाओं को प्रदान करना चाहियें जिससें बालको में प्रेम, सहयोग आदि सामाजिक भावनाएॅ विकसित होगी एवं उनमें स्वाभाविक रूप से व्यक्तित्व का विकास होंगा ।

क्योंकि व्यक्तित्व भी छात्रों की एक ऐसी श्रृंखला है जिसमें उनकी प्रवृत्ति तथा संपूर्ण कार्य का समावेश होता है । प्रस्तुत शोध विषय में विभिन्न उद्देश्यों में एक उद्देश्य छात्रों की रोमांचकारी प्रवृत्ति को ज्ञात करके उनमें योग्य व्यक्तित्व के निर्माण कर आवश्यक गुणों को बढावा देना भी है । इस प्रकार के रोमांचकारी अथवा साहसिक कार्य करने से छात्रों में आत्मविश्वास, स्वाभिमान, मित्रत्व, आशावाद, कार्यकूशलता का भाव निर्माण होगा तथा वे कठीण परिस्थिती में भी समस्या में विचलित नही होंगे। ऐसी रोमांचकारी या साहसिक वृत्ति से विद्यार्थियों में कल्पना, इच्छाशक्ति, परस्पर सहयोग तथा सहानुभूति आदि मानविय गुणों का विकास होगा । जिससे छात्र स्वयं के शैक्षिक उपलब्धि में वृध्दी कर समाज और राष्ट्र में स्वातंत्र्य समरसता, बंधुत्व, प्रेम, दया, करूणा, सहानुभूति, सहयोग आदि उदान्त मानविय भावनाओं का विकास करनें में एक अहम भूमिका निभा सकते है । जो प्रत्येक मनुष्य के जीवन का परम ध्येय है ।

रोमांचकारी प्रवृत्ति क्या है ?

रोमांचकारी प्रवृत्ति एक कठिन एवं साहसिक प्रवृत्ति है । परंतु भले ही यह प्रवृत्ति कठिन एवं साहसिक हो किंतु रोमांचकारी व्यक्ति स्वयं को साहसिक कार्यों में आनंदित महसूस करता है एवं दूसरों को अपनी ओंर आकर्षित भी करता है । यह प्रवृत्ति कनिष्ठ महाविद्यालयीन छात्रों में अधिक पाई जाती है । अपितु किशोरावस्था में बालकों की यह विशेषता है । ऐसे छात्र दूसरों के प्रशंसक भी बनते है या ऐसा भी निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि वे प्रशंसा प्राप्त कर समाज में स्वयं को सर्वश्रेष्ठ स्थापित करना चाहते हैं । ऐसे छात्रों की रोमांचकारी प्रवृत्ति उनके गर्व को प्रभावित करती है ।

रोमांचकारी प्रवृत्ति अनुवांशिकता तथा वातावरण से संबंध रखती है । उस व्यक्ति का परिवार, मित्र, समूह, योग्य स्वास्थ्य, सामाजिक स्वीकृति, स्वयं रूचि एवं इच्छाशक्ति आदि कारक छात्रों की इस रोमांचकारी प्रवृत्ति को प्रभावित करते है । व्यक्ति के जीवन में किशोरावस्था एक ऐसी अवस्था है, जो जीवन की दिशा को परिवर्तित तथा प्रभावित कर सकती है । इस अवस्था के छात्रों में अधिक साहसिक, असामान्य, अनपेक्षित कार्य करने की इच्छा होती है । अत: सबसे अधिक समाज के युवा वर्ग को यह रोमान्चकारी प्रवृत्ति प्रभावित करती है । एक अध्ययन सें यह निष्कर्ष निकाला गया है कि ''जो व्यक्ति कठिन कार्य करने में रूचि रखते हैं, वें दृढ इच्छाशक्ति रखने वाले होते है । फलत: वें व्यक्ति अपने जीवन में अधिक सफल होते है ।'' ष

शैक्षिक उपलब्धि क्या है ?

ऑक्सफोर्ड शब्दकोष के अनुसार महाविद्यालयीन परीक्षा से प्रस्तुत शोध कार्य में संबंधित किसी विषयों में सफलताओं का संख्यात्मक दर्शन ही उन विद्यार्थियों की उस विषय की शैक्षिक उपलब्धि है । शैक्षणिक उपलब्धि एक विद्याथियों के परीक्षण का एक माध्यम है इस माध्यम से यह ज्ञात होता है की छात्रों ने विद्यालय के विभिन्न विषयों में कितना ज्ञान अर्जित किया है, इससे उनकी योग्यता, क्षमता, ज्ञानात्मक विकास एवं बुद्धि के परिक्षण की जॉच संभव हो सकती है ।

शोधकार्य का महत्व एवं आवश्यकता :

जिन छात्रों की प्रवृत्ति रोमांचकारी होती है अर्थात् जो साहसिक कार्य में करने में कुशल होते है ऐसे छात्रों का शारीरिक विकास परिपूर्ण होता है और वे मानसिक रूप से भी स्वस्थ होते है । छात्रों के स्वास्थ्य का सीधा संबंध उनके व्यवहार से होता है । जिनके आधार पर उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा प्रभावित होती है । और वे बालक परीक्षाओं में अधिक अंक प्राप्त करते है ।

रोमांचकारी छात्रों का संपूर्ण विकास होता है क्योंकि इस प्रवृत्ति से प्रेरित छात्र साहसिक खेल तथा स्पर्धाओं में भाग लेते है जिससे उनकी समस्त क्रियाए तीव्रगति से क्रियाशील होने लगती है, मस्तिष्क एवं मांसपेशियों में पारस्पारिक सम्बन्ध स्थापित हो जाता है और उनका शरीर सुदृढ़ और शक्ति संपन्न हो जाता है । साहसिक या जोखिमभरी कृति करने से शारीरिक विकास के साथ–साथ मानसिक विकास भी होता है ऐसे छात्रों के मन में व्यर्थ के विचार नहीं आते है इन कार्यों के माध्यम से छात्रों का मन मानसिक कुंठाओं से मुक्त रहता है और इसके साथ–साथ महाविद्यालयों में आयोजित विभिन्न खेलों की स्पर्धाओं में भाग लेने से उनमें दृढ़ आत्मविश्वास का निर्माण होने लगता है और इसी आत्मविश्वास से रचनात्मकता का विकास होता है और छात्रों में बौद्धिक विकास अधिक होता है । क्योंकि इसी रचनात्मक प्रवृत्ति से छात्रों में जिज्ञासा की वृध्दि होती है । इस प्रकार रोमांचकारी प्रवृत्ति या कार्यों से छात्रों में शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा सामाजिक विकास होता है, जिससे उनमें सहयोग, जिज्ञासा, आत्मविश्वास, संघर्ष तथा कठिन परिस्थिति का

प्रतिकार करने की शक्ति, सदभावना, इमानदारी, सकारात्मक दृष्टिकोण, अनुशासन, स्वयं की किसी भी क्षेत्र में बढ़ने की लालसा, नियम पालन, आत्मत्याग, स्फूर्ति, प्रसन्नता आदि व्यक्तित्व के सहायक कारकों का निर्माण होता है और यही कारक उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक रूप से मददगार सिध्द होते है एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तर की होती है । इस प्रकार मनोवैज्ञानिक संदर्भ में छात्रों की रोमांचकारी प्रवृत्ति को ज्ञात कर अनुकूल कारकों को विकसित करने की उद्देश से निम्नांकित अनुसंधान विषय का विशेष महत्व है । उसी प्रकार यह प्रवृत्ति विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के स्तर को कितना प्रभावित करती है यह ज्ञात करने के लिए प्रस्तुत विषय की आवश्यकता निर्माण हुयी ।

अनुसंधान के उद्देश्य :

१. छात्रों की रोमांचकारी प्रवृत्ति का मापन करना ।
२. छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को ज्ञात करना ।
३. छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर रोमांचकारी प्रवृत्ति का कितना प्रभाव होता है यह जानना ।
४. रोमांचकारी प्रवृत्ति तथा शैक्षिक उपलब्धि के आंतरसंबंध का अध्ययन करना ।
५. निष्कर्ष तथा प्राप्त प्रतिक्रियाओं के आधार पर छात्र, छात्राओं, शिक्षकों, पालकों तथा प्रशासकों को सुधारात्मक सुझाव देना ।

परिकल्पना :

१. छात्र तथा छात्राओं की रोमांचकारी प्रवत्ति में सार्थक अंतर नही है ।
२. छात्र तथा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नही है ।
३. छात्रों की रोमांचकारी प्रवृत्ति तथा शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसंबंध नहीं है ।
४. छात्राओं की रोमांचकारी प्रवृत्ति तथा शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसंबंध नहीं है ।
५. विद्यार्थियों (Total Sample) की रोमांचकारी प्रवृत्ति तथा शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसंबंध नहीं है।

न्यादर्श :

यद्यपि प्रस्तुत अनुसंधान में गोंदिया तथा भंडारा जिले के सभी कनिष्ठ महाविद्यालयों का समावेश किया गया है । परंतु वास्तव में न्यादर्श में यह सभी कनिष्ठ महाविद्यालय के छात्रों पर अनुसंधान करना असंभव था । अत: छात्रों की संख्या एवं महाविद्यालयों को ध्यान में रखकर लॉटरी विधि से न्यादर्श में गोंदिया जिले से १२ तथा भंडारा जिले से ०८ ऐसे कुल २० कनिष्ठ महाविद्यालय एवं गोंदिया जिले के ६०० तथा भंडारा जिले के ४०० ऐसे कुल १००० छात्रों का समावेश न्यादर्श में किया गया है ।

अनुसंधान की विधि : सर्वेक्षण विधि :

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु अनुसंधान के स्वरूप के अनुसार सर्वेक्षण अनुसंधान इस विधि का चयन किया गया है । सर्वेक्षण विधि द्वारा कनिष्ठ महाविद्यालय के छात्रों से रोमांचकारी प्रवृत्ति मापनी के संदर्भ में प्रतिक्रियाएँ प्राप्त की गई एवं कक्षा १० वी तथा ११ वी के परीक्षा में प्राप्त अंको के प्रतिशत के आधार पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि को ज्ञात किया गया ।

प्रयुक्त उपकरण :

रोमांचकारी प्रवृत्ति मापनी परीक्षण :

प्रस्तुत अनुसंधान में उपकरण के रूप में डॉ. अशोक शर्मा (श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, केशव विद्यापीठ, जामड़ोली जयपुर) द्वारा निर्मित एवं प्रमाणित रोमांचकारी प्रवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया । इस मापनी की विश्वसनियता .८७३ तथा वैधता ’६९२ है । मापनी में अनेक कार्यों को कुल ३० क्रम में रखा गया है तथा प्रत्येक क्रम में दो कार्यों को दर्शाया गया है । जिसमें एक कार्य रोमान्चकारी प्रवृत्ति को एवं दूसरा कार्य सामान्य प्रवृत्ति को दर्शाता है । मापनी मे समाविष्ट दो कार्यों में किसी एक कार्य का चुनाव छात्रों को करना है ।

शैक्षिक उपलब्धि :

अनुसंधसान द्वारा सदस्य छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि का आकलन करने हेतु कक्षा ११ वी के छात्रों की १० वी तथा १२ वी में अध्ययन कर रहे छात्रों की ११ वी कक्षा की गुणतालिका में प्राप्त अंको के प्रतिशत का उल्लेख किया गया है जिससे छात्रों की रोमांचकारी प्रवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धी के आंतरसंबंध को ज्ञात किया जा सके ।

सांख्यिकीय विश्लेषण :

प्रस्तुत अध्ययन में परिकल्पनाओं का विश्लेषण अर्थात् दो समुह (छात्र—छात्राएँ) एवं दो चरों का सहसंबंध जानने के पूर्व निर्धारित दो चर क्रमश: रोमांचकारी प्रवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित प्रदत्त संकलित करके विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं को अंक प्रदान किये गये । पश्चात उन्हें सांख्यिकीय रूप देकर मध्यमान, मानक विचलन, अंतर (t- मान) तथा (r-मान) सहसंबंध ज्ञात किया गया, जिसके आधार पर रोमांचकारी प्रवृत्ति तथा शैक्षिक उपलब्धि के स्तर को निर्धारित किया गया । पश्चात प्राप्त t- मूल्य तथा r-मूल्य के आधार पर निष्कर्ष निकाले गये ।

निष्कर्ष :

१. छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में रोमांचकारी प्रवृत्ति अधिक पाई गयी ।
२. छात्रों में छात्राओं की अपेक्षा शारीरिक क्षमता अधिक पायी गयी । यह शारीरिक क्षमता रोमांचकारी खेल, स्पर्धा तथा कार्य को प्रभावित करती है ।
३. छात्रों की दृष्टि क्षमता अधिक पायी गयी है । छात्राओं की तुलना में छात्र जोखिमयुक्त स्पर्धाओं में अधिक रूचि लेते दिखाई दिये ।
४. साहसिक निर्णय लेने की क्षमता छात्रों में अधिक पायी गयी ।
५. दुर्गम स्थानों में सैर करने की इच्छा तथा नैसर्गिक विपदाओं में प!से लोगों की सहायता करने का साहस छात्रों में अधिक पाया गया ।
६. छात्रों की रोमांचकारी प्रवृत्ति तथा शैक्षिक उपलब्धि में भी सार्थक सहसंबंध है । अर्थात्, रोमांचकारी प्रवृत्ति का प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर होता है ।
७. परंतु छात्राओं की रोमांचकारी प्रवृत्ति तथा शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक ऋणात्मक सहसंबंध है । अत: इन छात्राओं की रोमांचकारी प्रवृत्ति तथा शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध नहीं है ।
८. शोध विषय में समाविष्टकुल विद्यार्थियों की रोमांचकारी प्रवृत्ति तथा शैक्षिक उपलब्धि में भी सहसंबंध सार्थक है । अत: इन विद्यार्थियों की रोमांचकारी प्रवृत्ति शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव डालती है । अर्थात् इन चरों में सहसंबंध है ।

सुझाव :

जो छात्र अति उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्तकर्ता है उनकी रोमांचकारी प्रवृत्ति भी अति उच्च स्तर की है , जो अति निम्न शैक्षिक उपलब्धिकर्ता पाये गये वे अति निम्न रोमांचकारी स्तर पर ही पाये गये । अर्थात्, शैक्षिक उपलब्धि का रोमांचकारी प्रवृत्ति से सार्थक सहसंबंध रहा है । अत: छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि बढाने के लिए उन्हें रोमांचकारी प्रवृत्ति हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए । अत: सुझाव निम्न प्रकार से है :

१. महाविद्यालय में शारीरिक, सैनिकी, पॅराशुट प्रशिक्षण ऐसे रोमांचिक तथा साहसिक स्पर्धाऍं आयोजित करनी चाहिए ।
२. दृढ़ इच्छाशक्ति को बढ़ाने हेतु शिक्षक तथा पालकों ने विद्यार्थियों को रोमांचकारी तथा कठिन कार्यों के प्रति प्रोत्साहन देना चाहिए जिससे वे कठिन व जोखिम भरे कार्य कर सके ।
३. कल्पनाओं के माध्यम से प्रतिभाओं को नये रूप में प्रयोग कर सकते है । अत: महाविद्यालय में पर्वतारोही, समुद्र में गोताखोरी, अंतरिक्ष पर सैर, खगोलीय घटना इत्यादि पर वृत्तचित्र दिखायें ।
४. महाविद्यालय में जूड़ो–कराटे, कुश्ति, अखाड़ा, मुष्ठी युद्ध, दौड़, ऐसे साहसिक खेलों का आयोजन करना चाहिए जिससे छात्राओं में खेल–कूद के प्रति रूचि पैदा होगी और वे स्वयं की रक्षा के लिए भी तत्पर हो सकेंगे ।
५. जब भी स्थानिय क्षेत्र में बाढ़ या भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाऍं आती है तब ऐसे समय पीड़ितों की सहायता शिक्षक तथा विद्यार्थियों ने मिलकर करनी चाहिए ।
६. ऐतिहासिक तथा दुर्गम स्थानों पर शिक्षकों ने विद्यार्थियों को ले जाना चाहिए । अर्थात्, यह सब कार्य विद्यालय में अध्ययन के साथ–साथ आयोजित करना चाहिएऔर जिन विद्यार्थियों की रूचि और रूझान ऐसे कार्यों की ओर है विशेषकर इन विद्यार्थियों को इस प्रकार के विभिन्न प्रशिक्षणों तथा स्पर्धाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। जिससे विद्यार्थी व्यक्तिगत प्रतिभाओं तथा कुशलताओं को मूर्त रूप दे सके एवं अपने बुध्दि तथा व्यक्तित्व का विकास कर सके ।

संदर्भ :

- **Chandra, A. &Kundu R.K. (1981),** Relationship between Personality factors and Academic Achievement of Students *Journals of Educational Research and Extension*, Vol-18 Baroda: M.S. University.
- **Nichols, Geoff (2000),** Risk and Adventure Education *Journal of Risk Research*,Vol-3 issue 2
- **Sehgal, R. & Malhotra S.(2001),** Adjustments, Risk taking behaviour and absenteeism *Journal of the Indian Academy of applied Psychology* Rohtak : M D University.
- थानी योगराज (२००५), शारीरिक शिक्षा और खेल मनोविज्ञान दिल्ली, खेल साहित्य केन्द्र.
- बालायन सुनील (२००३), स्वास्थ्य, शिक्षा, शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान दिल्ली, खेल साहित्य केन्द्र.